International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-12-2025, Accepted: 19-01-2026, Published: 03-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 65-68

गिरीश पंकज के उपन्यास में सामाजिक यथार्थबोध का चित्रण

विनीता भार्मा[1], डॉ. राजेश दुबे[2], डॉ. सविता मिश्रा[3]
[1] भोधार्थी, हिन्दी विषय, पं. रविशंकर शुक्ल, विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] शहीद राजीव पाण्डेय शास. महाविद्यालय, भाठागांव, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[3] निर्देशक, प्राचार्य एवं शोध निर्देशक, महाविद्यालय राजिम, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
गिरीश पंकज के उपन्यास में सामाजिक यथार्थबोध का चित्रण उनकी लेखनी का प्रमुख तत्व है। उनके उपन्यासों में शहरी और ग्रामीण समाज की विभिन्न समस्याएँ जैसे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, स्त्री–पुरुष असमानता, जातिवाद और गरीबी का सटीक चित्रण मिलता है। पंकज की भाषा एवं गहरी मानवीय समझ से यह समस्याएँ प्रभावी रूप से उभर कर सामने आती हैं। उनके पात्र समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों की पीड़ा और संघर्ष को सजीव रूप में दर्शाते हैं। उनका लेखन न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताओं और अन्याय पर गंभीर चिंतन भी प्रस्तुत करता है। गिरीश पंकज का साहित्य समाज में बदलाव की आवश्यकता को समझाने तथा पाठकों को जागरूक करने की प्रेरणा देता है।

मूल शब्दः उपन्यास साहित्य, सामाजिक यथार्थ, परिवारिक व सामाजिक यथार्थबोध एवं उपन्यास के विषय – वस्तु

उपन्यासकार गिरीश पंकज ने अपने उपन्यासों में समाज के उन चित्रों को उभारने की कोशिश की है, जिसके कारण समाज की दिशा बिगड़ती जा रही है और लोग गलत दिशा की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। एक सच्चा साहित्यकार अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण रूप से सजग होता है साथ ही वह अपने कर्तव्यों का भलीभाँति निर्वहन भी करता है और समाज के वास्तविक चित्र को लोगों के सामने लाने का कार्य भी करता है साथ ही उसमें सकारात्मक रूप से परिवर्तन करने का प्रयास भी करता है।[1] "गिरीश पंकज का जन्म 1 जनवरी सन् 1957 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता श्री कृष्ण प्रसाद उपाध्याय एक गांधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी थे तथा अपना पूरा जीवन खादी के प्रचार–प्रसार में लगा दिया। उनकी माता का नाम श्रीमती सावित्री देवी था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कोरिया के मनेन्द्रगढ़ में हुई। उन्होंने मनेन्द्रगढ़ में ही स्नातक की पढ़ाई पूरी की। उसके बाद उन्होंने बी. जे. बैचलर ऑफ जर्नलिज्म की परीक्षा दी, जिसमें उन्होंने मेरिट सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने 'बालकला' नामक एक संस्था का संचालन किया तथा 'सरगुजा समाज' नामक एक संस्था की स्थापना की जिसके माध्यम से उन्होंने साहित्य और कला के पारखी लोगों को विकसित करने का काम किया।"[2]

सम्मान पुरस्कार:- हिन्दी सेवाश्री सम्मान, त्रिनिडाड, रमणिका फाउंडेशन सम्मान, आर्यस्मृति साहित्य सम्मान, अट्टहास सम्मान, लीलारानी स्मृति सम्मान, रामे" वर गुरू पत्रकारिता सम्मान, करवट सम्मान, सर्वश्रेश्ठ् ब्लॉगर सम्मान, श्रीलाल भाुक्ल व्यंग्य सम्मान इत्यादि।

अन्यः- कन्नड़, तेलुगु, तमिल, मलयाली, भोजपुरी, ओडिसा, उर्दू, सिंधी, पंजाबी, मराठी, छत्तीसगढ़ी आदि में रचनाएं अनूदित, दस दे ाों की यात्राएं। "गिरी ा पंकज के कृतित्व–व्यक्तित्व पर कर्नाटक, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदे ा में पी–एच.डी. उपाधि के लिए शोधकार्य।"[3]

उपन्यास का अर्थ :- 'उपन्यास' शब्द की जड़ें संस्कृत शब्द के 'अस्' शब्द से बना है। 'नि' उपसर्ग के साथ मिलकर यह 'न्यास' शब्द बनता है। 'न्यास' का मतलब है विरासत या धरोहर। 'उपन्यास' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – 'उप' + 'न्यास'। 'उप' एक उपसर्ग है जो नजदीकी या निकटता दिखाता है। संस्कृत व्याकरण में 'न्यास' और 'उपन्यास' शब्दों के अलग–अलग अर्थ हैं। एक विशेश प्रकार के शब्द को 'न्यास' कहा जाता था। इसी प्रकार 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग शब्दों के संबंध में किया जाता है। जैसे किसी विशेश शब्द को संदर्भ में रखना 'पदन्यास' कहलाता है, उसी प्रकार शब्दों का उपयोग करके उनका मतलब समझाना 'वचनोपन्यास' कहलाता है। "हिंदी में 'उपन्यास' शब्द कथा साहित्य के लिए एक साहित्यिक शब्द के रूप में प्रारंभ हुआ। हिंदी में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में होता है जैसे बंगाली में 'उपन्यास', गुजराती में 'नकल कथा', मराठी में 'कादंबरी' और उर्दू में 'नॉवेल'। यहाँ 'नॉवेल' उन सभी रचनाओं को कहते हैं जो कथा सिद्धांत के सिद्धांतों का आंशिक या पूर्ण रूप से पालन करते हुए या उन्हें नजरअंदाज करते हुए पात्रों और घटनाओं के एक काल्पनिक मेल के कारण मानव की हमेशा बनी रहने वाली जिज्ञासा को संतुष्ट करती हैं।"[4]

उपन्यास का परिभाषा

डॉ. श्यामसुंदर दास के अनुसार – "उपन्यास मनुष्य जीवन की काल्पनिक कथा है।"
मुंशी प्रेमचन्द्र के अनुसार – "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रका ा डालना तथा उसके चरित्रों को स्पष्ट करना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"
बाबू गुलाबराय के शब्दों में – "उपन्यास कार्य कारण श्रृंखला में बंधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें वास्तविक व काल्पनिक घटनाओं द्वारा जीवन के सत्यों का उद्घाटन किया है।"[5]
"आधुनिक युग में भारतीय जीवन में अनेक सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याएँ तेजी से व्याप्त हो रही थीं। गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर उपन्यासकारों ने सामाजिक सुधार को अपनाया और अपनी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करना शुरू किया। इन समस्याओं में दहेज, बाल विवाह और जमींदारी प्रथा शामिल थीं। उपन्यासकारों के अनुसार ये समस्याएँ व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि समाज द्वारा उत्पन्न की गई थीं।"[6]

गिरीश पंकज के उपन्यासों का विवरण

क्र.	रचना का नाम	प्रकाशक	प्रंकाशन वर्श
1.	मिठलबरा की आत्मकथा	सद्भावना प्रकाशन, रायपुर	1999
2.	माफिया	जगतराम एण्ड संस, गाँधीनगर, दिल्ली	2003
3.	पॉलीवुड की अप्सरा	आर्य प्रकाशन मंडल गाँधीनगर, दिल्ली	2008
4.	एक गाय की आत्मकथा	सर्वप्रिय प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
5.	मीडियाय नमः	विद्या विहार, नई दिल्ली	2013
6.	टॉऊन हाल में नक्सली	यश पब्लिकेशंस, शाहदरा, दिल्ली	2013

सन् 2016 का उपन्यास 'स्टिंग ऑपरेशन' गिरीश पंकज का एक सशक्त उपन्यास है। उनकी विशेषज्ञता वर्तमान समय के ज्वलंत मुद्दों की पड़ताल करने में रही है। वे मुश्किलों एवं चुनौतियों के डर से पीछे नहीं हटते। "यह उपन्यास वर्तमान जासूसों चाहे वे नकली हों या असली पर तीखा व्यंग्य करते हुए समसामयिक मुद्दों पर एक सशक्त प्रहार करता है।"[7]

सामाजिक यथार्थ का अर्थ :- सामाजिक यथार्थ का अर्थ मनुष्य द्वारा की गई सामान्य गतिविधियों का वास्तविक चित्रण से है। ज्ञान शब्दको ा में सामजिक शब्द का तात्पर्य– शज संबंधी', 'समाज में पाये जाने वाला' आदि के रूप में परिभाशित किया गया है। इसी शब्दको ा में यथार्थ का अर्थ – 'सच्चाई', 'उपयुक्तता' का प्रकटीकरण से किया गया है। इस प्रकार दोनों के अर्थों को मिला दे तो 'सामाजिक यथार्थ' बन जाता है। जिसका अभिप्राय समाज में होने वाली सच्ची घटनाओं का वास्तविक चित्रण है। "इसका आ ाय है कि समाज में होने वाली प्रत्येक घटना साहित्य के माध्यम से ठोस रूप ले लेती है। लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के उतार–चढ़ाव की सच्ची तस्वीर जनता के सामने लाने की कोि ा ा करता है। इस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। सामाजिक यथार्थ का सीधा सा मतलब है कि समाज को ठीक वैसा ही दिखाया जाना चाहिए जैसा वह है।"[8]

गिरीश पंकज के उपन्यास में पारिवारिक यथार्थबोध:- इस अध्याय का विशिष्ट उद्दे य उपन्यासों का अध्ययन करके उनके मूल एवं अन्य विषयों का निर्धारण करना है। साहित्य केवल मनोरंजन या विद्वत्ता के प्रदर्शन का साधन नहीं है। साहित्य वह है जिसका समाज से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संबंध होता है। साहित्य का समाज के विभिन्न अंगों, जैसे व्यक्ति, परिवार, जाति, धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति आदि से सीधा संबंध होता है। समाज में होने वाली घटनाएं आगे चलकर साहित्य का विषय बन जाती हैं। अर्थात, समाज से साहित्य प्रभावित होता है और दूसरी ओर साहित्य समाज को प्रभावित करता है तथा एक–दूसरे को प्रभावित करने के उद्देश्य से ही साहित्य की रचना की जाती है।

गिरीश पंकज के उपन्यास में सामाजिक यथार्थबोध का चित्रण :- गिरीश पंकज के उल्लेखनीय उपन्यासों में मिठलबरा की आत्मकथा, माफिया, पॉलीवुड की अप्सरा, एक गाय की आत्मकथा और मीडियाय नमः शामिल हैं। साहित्यकार गिरीश पंकज अपने उपन्यासों में समकालीन समाज में घटित घटनाओं को नाटकीय रूप प्रदान करते हैं। गिरीश के उपन्यासों में किसी भी प्रकार की अति–उग्र कथानक का अभाव है, क्योंकि उन्होंने घटनाओं को बिना किसी छेड़छाड़ के ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने पर ही ध्यान केंद्रित किया है। उपन्यासों की कुछ घटनाएँ वास्तविक घटनाओं से इतनी मिलती–जुलती हैं कि पाठक कुछ पात्रों की कल्पना अपने परिवेश या समाज के अंदर ही रहकर कर सकता है। उपन्यासों में चित्रित विभिन्न घटनाओं और विषयों को समझने के लिए निम्न उपन्यास का अध्ययन करना आव यक है। जैसे–

- **'मिठलबरा की आत्मकथा'**

इस कृति का शीर्षक आत्मकथा या जीवनी का आभास देता है, लेकिन यह दोनों में से कुछ भी नहीं है। वास्तव में यह एक संपादक की कहानी है, जिसे लेखक पत्रकारिता में एक भ्रष्ट संपादक के जीवन का विस्तार से वर्णन करने के लिए प्रस्तुत करता है। "मिठलबरा की आत्मकथा के कहानी में एक संपादक की कहानी को बताया गया है, जिसमें एक संपादक के विभिन्न संघर्षों को उजागर किया गया है कि किस प्रकार से एक संपादक पत्रकारिता जैसे स्वतंत्र पेशे में एक समाचार मालिक का गुलाम बन जाता है किस प्रकार भ्रष्ट लोग ईमानदार लोगों को नापसंद करते हैं और कैसे ईमानदार लोगों पर आसानी से आरोप लगाकर उन्हें बर्खास्त कर दिया जाता है। उपन्यास का केंद्रबिंदु 'मिठलबरा' नाम का एक व्यक्ति है, जो पत्रकारिता को केवल पैसा कमाने का साधन बनाना चाहता है और सबसे अनैतिक कार्य कराने से भी संकोच नहीं करता। एक समय था जब पत्रकारिता एक मिशन थी, लेकिन इस उपन्यास में नायक मिठलबरा पत्रकारिता को कमीशन कमाने वाले व्यवसाय में बदलना चाहता था।"[9]

- **'माफिया'**

'माफिया' उपन्यास पत्रकारिता, साहित्य और शोध में फैले भ्रष्टाचार, बेईमानी एवं अंधकार को गहराई से उजागर करने वाला तथा समाज के वास्तविकता को को लोगों के सामने लाने में सक्षम है। यह उपन्यास समाज में व्याप्त बुराइयों का स्पष्ट चित्रण करता है। उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में हो रहे अनैतिक कार्य को द ार्ाने तथा उजागर करने का कार्य इस उपन्यास में किया गया है। हालाँकि, मानवीय कर्मों का साहित्य से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं होता है। मानव अधिकारी तथा अवैध गतिविधियों में लिप्त लोग साहित्य के क्षेत्र में घुसपैठ कर चुके हैं और अपनी संवेदनशीलता पर नियंत्रण नहीं कर पाते इसके पश्चात् भी वे साहित्य में अति–संवेदनशील होने का प्रयास करते रहते हैं। उदाहरण के लिए "यह कहाँ लिखा है साथी कि व्यवसाय में एक महिला कवि नहीं हो सकती? अरे, जब लोगों को पीटने वाले पुलिस अधिकारी लेखक हो सकते हैं और रि वत लेने वाले आईएएस अधिकारी लेखक हो सकते हैं? अगर अधिकारी लेखक बन सकते हैं और शोषण के लिए कुख्यात राजनेता नैतिकता के गीत गा सकते हैं, तो कॉल–गर्ल्स और स्त्री–छवि से जुड़ी बातें क्यों नहीं लिख सकतीं?' यह उपन्यास पत्रकारिता की आंतरिक घटनाओं को उजागर करने का भी अनूठा प्रयास करता है, जिसमें लेखक स्वयं उद्वेलित दिखाई देता है।"[10]

- **'पॉलीवुड की अप्सरा'**

आपने हॉलीवुड, बॉलीवुड और चॉकलेटीवुड जैसे नाम तो सुने ही होंगे, लेकिन 'पॉलीवुड' असल में क्या है? पाठकों का यह सवाल पूछना स्वाभाविक है, क्योंकि एक सजग और समझदार पाठक होने के नाते आपने भी इसके बारे में सोचा होगा। हॉलीवुड और बॉलीवुड के जैसे 'पॉलीवुड' भी एक कल्पना आधारित दुनिया है,

जिसे लेखन ने फिल्मी दुनिया के अनुरूप बनाया है। इस संबंध में डॉ. चित्तरंजन कर कहते हैं कि – "पॉलीवुड की अप्सरा उत्तर–आधुनिक मनुष्य के मोहभंग की कहानी है, जिसमें गिरीश पंकज एक विशुद्ध व्यंग्यकार सिद्ध होते हैं। बात यह है कि व्यंग्यकार ने इस उपन्यास में यथार्थ का त्याग नहीं किया है, जिससे यह समझना आसान हो जाता है कि व्यंग्य लेखन भी सच्चा लेखन हो सकता है। जिस प्रकार बॉलीवुड को हॉलीवुड के अनुरूप ढाला गया, उसी प्रकार 'पॉलीवुड' को भी बॉलीवुड के अनुरूप ढाला गया। पॉलीवुड की अप्सरा भी बॉलीवुड के समानांतर एक दुनिया में अपनी सुंदरता, आकर्षण, सुगंध और स्पर्श के लिए प्रसिद्ध है। 'पॉलीवुड की अप्सरा' उपन्यास एक सुंदर लड़की की कहानी पर केंद्रित है, जो अपनी सुंदरता और आकर्षण से प्रेरित होकर फिल्मी दुनिया में प्रवेश करती है और सफलता पाने के लिए अपनी मानवता का त्याग कर देती है। वह पैसे, पद या प्रतिष्ठा के लिए अपनी गरिमा को दांव पर लगा देती है साथ ही पॉलीवुड की गंदी दुनिया में ऐसी दुर्दशा का सामना करती है कि लेखक ने स्पष्ट वर्णन के माध्यम से लड़कियों को आगाह करने का प्रयास किया है कि फिल्मी दुनिया कितनी गंदी है जिसमें प्रतिष्ठा, विलासिता और वैभव केवल दिखावा मात्र हैं वास्तविकता कुछ और ही है। यह उपन्यास उसी वास्तविकता को उजागर करने का प्रयास करता है। उपन्यास में एक ओर लेखक ने 'पेरी' के पात्र को केंद्र में रखकर फिल्मी दुनिया की वास्तविकता और बुराइयों को सामने लाने का प्रयास किया है, वहीं दूसरी ओर अनुसूया जैसे पात्र का भी उल्लेख किया है, जिसने अपनी मानवता को जीवित रखा तथा पॉलीवुड की वास्तविकता जानने के बाद फिल्मों को त्याग दिया।"[11]

- **'एक गाय की आत्मकथा'**

यदि हम इस उपन्यास की रचनात्मक प्रक्रिया का सूक्ष्मता से अध्ययन करें, तो यह अपने आप में एक शोध–कार्य है। तथापि लेखक के विचारों, भावात्मक पहलुओं, शिल्प और कथात्मक रूप के आधार पर मूल्यांकन करने पर यह वास्तव में एक उपन्यास है। जिस प्रकार एक उपन्यास किसी कहानी का पूर्ण और गहन वर्णन करता है, उसी प्रकार वह व्यक्ति के जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं का भी विवरण प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, मुख्य कहानी के साथ एक सहायक कहानी भी चलती है, जो कहानी के प्रवाह को बाधित नहीं करती। यह उपन्यास एक गाय के संपूर्ण जीवन के सुख–दुख का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करता है। गाय का मानवीय रूप प्रस्तुत करके लेखक उसके साथ हो रहे अन्याय, दिखावे, सामाजिक पाखंड और क्रूरता को उजागर करने का प्रयास करता है। ये पंक्तियाँ गाय के साथ हो रहे अन्याय को दर्शाती हैं – "श्यामा ने देखा कि कुछ गायों को चारों पैरों से बाँधकर फेंक दिया गया था।' ये सभी गायें वध के लिए तैयार की जा रही थीं। हालाँकि, वहाँ और भी बैल थे। गायों को मारने के बाद उनका मांस विदेश भेजा जाएगा। गायें कराह रही थीं, लेकिन केवल गायें ही उन्हें सुन पा रही थीं। वे सब एक–दूसरे को देख रही थीं और आँसू बहा रही थीं। गाय के नाम पर समाज में व्याप्त पाखंड को उजागर करते हुए पवित्र ग्रंथों का सार प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।"[12]

'गौ वंदन' सर्वप्रिय प्रकाशन द्वारा सन् 2016 में प्रकाशित एक काव्यात्मक कृति है, जो गीतिकाव्य में रचित है। यह कृति लेखक की गाय के प्रति भक्ति और श्रद्धा को दर्शाती है। लेखक ने गाय को धार्मिक विषय से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय मुद्दा बनाने का सदैव प्रयास किया है। वे गाय की देखभाल का दिखावा करने वालों और उसकी सच्ची सेवा करने वालों के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं साथ ही उनकी कलम ने समाज में जागरूकता लाने का बीड़ा उठाया है। सन् 2013 में पहली बार प्रकाशित "एक गाय की आत्मकथा' का दूसरा संस्करण 2016 में हिरदाराम सेवा समिति, जयपुर द्वारा स्वतः स्फूर्त रूप से पुनः प्रकाशित किया गया। इस कृति का पाठकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इसका मूल उद्देश्य गाय के वास्तविक स्वरूप को उजागर करने के साथ लोगों को निःस्वार्थ भाव से उसकी सेवा करने के लिए प्रेरित करना था। लेखक की लेखन भौली का प्रभाव व्यावहारिक जीवन में भी दिखाई देने लगा है। गिरीश जी की समकालीन रचनाएँ अत्यधिक तीक्ष्ण, सशक्त एवं प्रभाव ाली हैं। कलात्मक और भावनात्मक दोनों ही दृष्टियों से आपकी समकालीन रचनाएँ अधिक रोचक लगती है तथा यह कार्य आज भी जारी है।"[13]

उपन्यासों के विषय–वस्तुओं का निर्धारण: किसी उपन्यास का एक प्रमुख तत्व उसका विषय होता है। लेखक की कथात्मक संरचना उसके प्रमुख तत्वों पर आधारित होती है– कथानक, पात्र और चरित्र–चित्रण, भाषा–शैली, विषय–वस्तु, नाटकीयता, समय और स्थान। कथानक उपन्यास के कथात्मक प्रवाह, मुख्य कथानक और सहायक कथानकों की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। चरित्र–चित्रण से यह पता चलता है कि कहानी पात्र–प्रधान है या घटना–प्रधान। किसी एक पात्र के इर्द–गिर्द घूमती कहानी को पात्र–प्रधान कहानी कहते हैं। समय और स्थान के संदर्भ जैसे कि परिवेश, यह निर्धारित करते हैं कि उपन्यास ऐतिहासिक, राजनीतिक, समकालीन या भौतिकवादी है। भाषा–शैली के अंतर्गत उपन्यास की शैली, भाषा और उसकी लेखन शैली का विश्लेषण किया जाता है। यह खंड उस मूल भाषा का विश्लेषण करता है जिसमें रचना लिखी गई है तथा रचना में प्रयुक्त अन्य भाषाओं और बोलियों के शब्दों का भी। "यद्यपि उपन्यासों में नाटकीय तत्वों के निर्माण हेतु किसी ने कोई विशेष प्रयास नहीं किया ऐसा इसलिए है, क्योंकि उपन्यास में पात्रों की संख्या नाटक या एकांकी की तुलना में अधिक होती है और समय, स्थान और वातावरण नाटकीयता के अनुकूल नहीं होते। फिर भी अनेक उपन्यासों का मंचन किया गया है। आज के समय में मीडिया ने इन समस्याओं के समाधान में भरपूर योगदान दिया है। उपन्यासों पर आधारित धारावाहिक प्रस्तुत किए जा रहे हैं और फिल्में भी बन रही हैं। इस दृष्टि से उपन्यासों का महत्व बढ़ गया है और लेखकों ने उपन्यास लेखन में विशेष रुचि दिखाई है।"[14]

निष्कर्श

गिरीश पंकज के उपन्यास समकालीन समाज की वास्तविकताओं का गहन और प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। उनका जीवन और कार्य, विशेषकर पत्रकारिता और सामाजिक सक्रियता, उनके साहित्य को यथार्थ के करीब ले आए हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में समाज, राजनीति, शिक्षा और आम जनता के संघर्षों का सहज और सजीव चित्रण होता है। गिरीश पंकज के उपन्यासों की प्रस्तावना से यह स्पष्ट होता है कि वे केवल मनोरंजन के लिए कथाएँ नहीं रचते, बल्कि समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर करने और पाठकों को उन पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं। यथार्थ उनका मूल आधार है, जिसमें सामाजिक अन्याय, भ्रष्टाचार, मूल्य–परिवर्तन और जन–संघर्ष प्रमुखता से उभर कर आते हैं। पारिवारिक यथार्थ का बोध भी उनके लेखन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके उपन्यासों के सामाजिक चित्रण उनके उपन्यासों को जीवन के यथार्थ से जोड़ते हैं। गिरीश पंकज का उपन्यास सामाजिक यथार्थ को उल्लेखनीय प्रभाव के साथ चित्रित करता है। उनकी दृष्टि व्यापक है, जो समाज के विभिन्न वर्गों के दुख, संघर्ष और आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करती है। उनके उपन्यासों की विषयवस्तु सामाजिक सरोकारों से ओतप्रोत है, जो साहित्य को सामाजिक परिवर्तन की चेतना से ओतप्रोत करती है। अंततः यह कहा जा सकता है कि गिरीश पंकज का उपन्यास आधुनिक

समाज का जीवंत दस्तावेज है, जो यथार्थ, संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता की गहराई से हिंदी साहित्य को एक अनूठी दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पंकज गिरीश (2021) मिठलबरा की आत्मकथा। किताबगंज प्रकाशन, सवाई माधोपुर (राजस्थान) : पृष्ठ संख्या – 52।
2. कुमार विजय (2017) गिरी ा पंकज के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार। पी–एच.डी. शोध प्रबंध, पं. रवि ांकर शुक्ल वि वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) : पृष्ठ संख्या 37–41।
3. तंगम जे. जाक्कुलिन (2021) गिरीश पंकज के व्यंग्य उपन्यास : एक वि लेषण। International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET), 4(12) : पृष्ठ संख्या – 2423।
4. अग्निहोत्री डॉ. श्री नारायण (1961) हिन्दी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन। पी–एच.डी. शोध प्रबंध, आगरा वि वविद्यालय : पृष्ठ संख्या – 03।
5. त्यागी मोनू (2023) हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का स्थान। An International Scholarly Open Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal, 10(10) : पृष्ठ संख्या – 685
6. सोमवीर (2018) उपन्यास की परिभाषा व हिन्दी उपन्यासों की विचारधाराएँ : एक अध्ययन। Published in IJIRMPS, 6(3) : पृष्ठ संख्या – 3।
7. कुमार विजय (2017) गिरीश पंकज के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार। पी–एच. डी. शोध प्रबंध, पं. रवि ांकर शुक्ल वि वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) : पृष्ठ संख्या 47– 49।
8. रानी डॉ. रेखा (2019) साहित्य, समाज और सामाजिक यथार्थ : एक विश्लेशणात्मक अध्ययन। Research Review International Journal of Multidisciplinary. 4(6): पृष्ठ संख्या – 1305।
9. गिरीश पंकज (2021) मिठलबरा की आत्मकथा। किताबगंज प्रकाशन, सवाई माधोपुर (राजस्थान) : पृष्ठ संख्या – 136।
10. गिरीश पंकज (2021) माफिया। किताबगंज प्रकाशन, सवाई माधोपुर (राजस्थान) : पृष्ठ संख्या – 192।
11. गिरीश पंकज (2008) पॉलीवुड की अप्सरा। आर्य प्रकशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली।
12. कुमार विजय (2017) गिरीश पंकज के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार। पी–एच.डी. शोध प्रबंध, पं. रवि ांकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) : पृष्ठ संख्या 82–90।
13. कुमार विजय (2017) गिरीश पंकज के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार। पी–एच.डी. शोध प्रबंध, पं. रवि ांकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) : पृष्ठ संख्या– 50
14. कुमार विजय (2017) गिरीश पंकज के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार। पी–एच. डी. शोध प्रबंध, पं. रवि ांकर शुक्ल वि वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) : पृष्ठ संख्या– 93